मातृभाषा – संस्कृति व परम्परा की जीवंतता

निशा किचलू
रा.ज.सं., रूड़की

मातृभाषा में अपनी कहावतें, लोक कथाएं, कहानियां, पहेलियां, सूक्तियां होती हैं, जो सीधे हमारी स्मृति की धरती से जुड़ी होती हैं।

मातृभाषा अपने माता–पिता से प्राप्त भाषा है। उसमें जड़ें हैं, स्मृतियां है और बिंब भी। मातृभाषा हमें एक अलग संस्कृति व आचरण देती है। हमारी मातृभाषा, हमारी संस्कृति व परम्परा से जुड़ी होने के कारण, बोलने के लिए अधिक सहज, सरल व प्रभावी होती है। अपनी मातृभाषा, अपनी संस्कृति व इतिहास की वाहक भी होती है। दूसरी भाषा में हमारे सच्चे सपने नहीं आ सकते। मातृभाषा में अपनी कहावतें, लोककथाएं, कहानियां, पहेलियां, सूक्तियां होती हैं, जो सीधे हमारी स्मृति की धरती से जुड़ी होती हैं। हम अपनी आत्मिक पीड़ा, भावनाएं, विचार अपनी ही मातृभाषा में सहज व सरल रूप से व्यक्त कर सकते हैं, किसी अन्य भाषा में नहीं। अपनी मातृभाषा में हम जितनी तीव्रता व गहराई से अपने देश की महादशा व पीड़ा का बयान कर सकते है, दूसरी किसी भाषा में वह मार्मिकता व विश्लेषण संभव नहीं। मातृभाषा से अपने परिवेश व पर्यावरण का बोध होता है। आपसी संबंधों में मजबूती आती है, अलगांव से बचाव होता है।

मातृभाषा से वह मौखिक लय प्रकट होती है जिसमें प्रकृति ओर परिवेश के साथ सामाजिक संघर्ष भी प्रकट होता है। उससे साहित्य और संस्कृति के सकारात्मक तत्व भी सामने आते हैं। अपनी संस्कृति की जड़ों में जाकर हमें आत्मविश्वास की अनुभूति होती है। उधार ली हुई भाषाएं संपूर्णतः हमारे साहित्य एवं कलाओं का विकास नहीं कर सकती। क्योंकि उनका संबंध हमसे भावात्मक रूप से जुड़ा नहीं होता है। उधार की भाषा का सत्ता केंद्र कहीं और होता है और वह केन्द्र मातृभाषा जैसी आकांक्षा की पूर्ति का वाहक नहीं हो सकता। मातृभाषा में अपनी धरती की जो गंध है और कल्पनाशीलता का जो पांरपरिक सिलसिला है, वह अन्य भाषा में संभव नहीं। साम्राज्यवाद सबसे पहले हमारे सांस्कृतिक धरातल पर आक्रमण करता है। वह भाषा को अवमूल्यित करने लगता हैं। हमारी ही भाषा को हीनतर बताता हैं। हम अपनी मातृभाषा से कतराने लगते है और विश्व की दबंग भाषाओं को महिमा मंडित करने लगते हैं। उसी भाषा से अभिव्यक्ति करने लगते हैं या बंध जाते हैं और अंततः अपनी मातृभाषा से दूर होने लगते हैं। गर्व से कहते हैं! कि मेरे बच्चों को अपनी मातृभाषा नहीं आती। वास्तव में वर्गीय समाजों में दो तरह की शिक्षा के बीच संघर्ष चलता है जो दो परस्पर संस्कृतियों का प्रसार करती है। उसमें से एक वर्ग अपने लिए वैसी ही भाषा चुनेंगे, जो उनके क्लास का प्रतिनिधित्व करे! इसी देश में कई जगह बच्चें अपनी मातृभाषा बोलते हुए दंड पाते हैं और संस्थानों से निकाल दिए जाते हैं।

वास्तव में मातृभाषा में जनता के संघर्ष बोलते हैं। कोई व्यक्ति जो मातृभाषा की महत्ता जानता है, उसे पता है कि आंदोलन, आत्म–अविष्कार, लोकछवि और बदलाव के लिए इससे बेहतर कोई और माध्यम नहीं, क्योंकि उसका वास्ता उन भाषाओं से पड़ेगा, जो वहां की जनता बोलती है। मातृभाषा के माध्यम से, लोगों की वास्तविक आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति दी जा सकती है तथा नई चेतना की आकांक्षा को स्वर दिया जा सकता है। श्रमिक वर्ग और जनसामान्य को मूलतः उनकी मातृभाषा में अच्छी तरह संबोधित किया जा सकता है। यदि मातृभाषा को आधार बनाया गया तो समाज, अपनी भाषा, साहित्य, धर्म, थिएटर, कला, नृत्य और एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करता है जो इतिहास और भूगोल को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को पहुंचा पाते हैं। मूल है, वह सौंदर्य बोध, जो हमारी लोक कथाओं, हमारे सपनों, विज्ञान, हमारे भविष्य की कामना में छिपा है। उसका सौंदर्य हमारी धरती की महक से उपजा होता है।

अन्य भाषाओं को अपनाने, उनमें अभिव्यक्ति करने में कोई बुराई नहीं। ना ही उनमें ज्ञान–विज्ञान–सामाजिक विज्ञान सीखने व अर्जित करने में कोई संकोच है। मूल बात यह है कि जो ताकतें मातृभाषा को रचनात्मकता से हीन करने और उसे हीनतर साबित करने में सक्रिय रही हैं, उन्हें पहचानने और उनके क्रूर आचरण से सावधान रहने की आवश्यकता है। हमारे साहित्य व सृजनात्मकता का सर्वोच्च वैभव हमारी मातृभाषा में ही संभव है। वह असीम है, कल्पना का वह छोर है वह हमारी धरती का रंग है, वह हमारे भविष्यकामी है। मातृभाषा में परम्परा की जीवतंता है। वह किसी और देश की अन्य धारा की मुखोपक्षी नहीं। वह हमारे गोमुख से आती है। उसमें हमारे देश के मूल्य निहित हैं। उसमें हमारी धूप और हमारी छांव है। हमारी धमनी और शिराएं उससे रोमांचित होती हैं। वह हमारी वर्षों से स्थापित सभ्यता की वाहक है। मातृभाषा हमारी परम्परा में हमें परिष्कृत करती चलती है। वह हमें जो मिठास देती हैं, दूसरी भाषा नहीं दे सकती। मातृभाषा जीवंत अभिव्यक्ति का शायद सबसे सुंदर माध्यम हैं। वह न केवल सहज शिल्प है, अपितु सबसे अर्थपूर्ण संभावना भी है। मातृभाषा में मनुष्य की स्मृतियां अधिक सुरक्षित व पल्लवित होती है।

क्रोध करना एक जले हुए कोयले की अंगीठी को हाथ में रखने के समान है जो दुश्मन के ऊपर फेंकने से पहले क्रोधित व्यक्ति का हाथ जलाता है।